राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 मार्च 2020
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, १२१
युगाब्द-५१२१, अंक-१२४, वर्ष-१३
चैत्र विक्रमी २०७७ (मार्च 2020)

मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि । अप नः शोशुचदघम् ॥ –ऋ०१। ७। ५। ६॥

व्याख्यान–हे अग्ने परमात्मन्! (त्वं हि) तुम ही (विश्वतः परिभूरसि) सब जगत् में सब ठिकानों में व्याप्त हो। अत एव आप [(विश्वतोमुखः)] विश्वतोमुख हो। हे सर्वतोमुख अग्ने! आप स्वमुख नाम स्वशक्ति से सब जीवों के हृदय में सत्योपदेश नित्य ही कर रहे हो, वही आपका मुख है। हे कृपालो! (अप नः शोशुचदघम्) आप की इच्छा से हमारा पाप सब नष्ट हो जाय। जिससे हम लोग निष्पाप होके आपकी भक्ति और आज्ञापालन में नित्य तत्पर रहें।

सम्पादकीय

जेहादी आतंकवाद

दिल्ली में हाल की हिंसा या यूं कहें कि जो जेहादी आतंकवाद फैलाया गया वह बहुत चिंतनीय विषय है। देश में हजारों वर्षो की गुलामी के दौरान जिस प्रकार का आतंक यहां के समाज में फैला रहता था। पूरा समाज आतंक से भयभीत तथा आतंकित रहता था और जिसके परिणामस्वरुप ही यह राष्ट्र अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश के भूभागों को अपने से अलग कर बैठा।

१९४७ के बाद से भी रह-रहकर आतंक का प्रभाव देश में रहा है लेकिन वर्तमान में इतने वर्षों बाद वह फिर से भयंकर रूप ले रहा है ऐसा लग रहा है कि जेहादी मानसिकता के लोगों ने इतने वर्षों तक अपनी मानसिकता को न बदलकर केवल जेहाद की तैयारी में ही समय बिताया है। वर्तमान के हिंसा और राष्ट्र की वर्तमान परिस्थिति के मूल में सरकार द्वारा बनाया गया एक कानून है और जो कानून देश में रहने वाले किसी भी नागरिक के अधिकारों का हनन नहीं करता है, न ही उस पर कोई प्रभाव डालता है। उसका इस देश के कुछ लोग इतना घनघोर विरोध करें और इसके लिए पूरे राष्ट्र की शांति व्यवस्था को ही भंग करने के लिए उतारू हो जाएं, ऐसा शायद किसी राष्ट्र में देखने को नहीं मिलता। विदेशी लोगों के अधिकार के लिए अपना कहलाने वाले देश को ही बर्बाद करने के लिए तैयार हो जाना तो फिर ऐसे लोगों को कैसे देश का सभ्य नागरिक माना जा सकता है? पिछले लगभग ३ माह से किस प्रकार से देश में हिंसा का वातावरण बनाया जा रहा है और जब उस से तंग आकर कुछ लोगों ने उसे रोकना चाहा तो उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप पूरी दिल्ली को आतंकित किया गया। ५० से अधिक लोगों की हत्या की गई, सैकड़ों लोग गंभीर रूप से घायल होकर जीवन भर के लिए अपंग हो गए। हजारों करोड़ की संपत्ति को फूंक दिया गया। हत्या के ऐसे जघन्य तरीके अपनाए गए जो केवल इस प्रकार की मानसिकता के लोगों द्वारा ही इतिहास में अपनाए जाते रहे हैं। यहां प्रश्न यह नहीं है कि हिंसा में किन लोगों की हत्या हुई, किस संप्रदाय के लोगों की संपत्ति फूंक दी गई, अपितु महत्वपूर्ण यह है कि जो लोग शांतिपूर्ण, व्यवस्थित, सुखपूर्वक अपना जीवन निर्वाह करना चाहते हैं उन्हीं लोगों को इसकी सबसे ज्यादा हानि उठानी पड़ी। सभी निर्दोष लोगों की हत्या हुई और यह बात किसी से छिपी नहीं है कि कौन लोग देश में सुख शांति से रहना चाहते हैं और कौन लोग देश की शांति भंग करके देश को तोड़ना चाहते हैं। इस जिहादी आतंकवाद से आज पूरा विश्व प्रताड़ित है इसका दंश सबसे ज्यादा हजारों सालों की गुलामी के दौरान हमारे पूर्वजों ने झेला है।

इसके मूल में इन जिहादियों के मत के ऐसे ऐसे सिद्धांत हैं जहां जन्नत का मार्ग केवल पैगंबर और उसकी पुस्तक से होकर जाता है ना कि मनुष्य द्वारा किए गए कर्मों से। अर्थात् मनुष्य के द्वारा किए गए कार्य का कोई महत्व नहीं अपितु केवल विश्वास का ही महत्व है। जहाँ इस प्रकार के सिद्धांत होंगे वहां कोई व्यक्ति मानव हित के कार्यों को क्यों महत्व देगा, वह तो केवल तौबा करने से ही सारे पापों से छुटकारा पा लेगा और निर्दोषों की हत्या कर जन्नत का मार्ग प्राप्त करेगा। इन्हीं विद्याहीन तर्कहीन सिद्धांतों को जीवन में अपना-अपना कर इन लोगों ने पिछले लगभग १४ सौ सालों से संसार भर में आतंक फैलाने का काम अपने दूसरे बड़े भाइयों अर्थात् ईसाइयों के साथ मिलकर किया है। यह जिहाद एक असत्य, लोभ, स्वार्थ व अज्ञानता की विचारधारा है और विचारधारा का सामना एक तो विचार से किया जा सकता है और दूसरा यदि व्यक्ति सत्य, निस्वार्थ, ज्ञान या विद्या को स्वीकार न करें तो उसे केवल बल या भय से ही मनाया जा सकता है। अतः दिल्ली जैसे आतंक से यदि राष्ट्र को बचाना है तो लोगों में बल पैदा करना होगा जो संगठित होकर ही हो सकता

सम्पादकीय का शेष ....

है और संगठित तथा बलशाली के सिद्धांत को ही स्वीकार किया जाता है भले ही वह सत्य, श्रेष्ठ, सर्वहितकारी सिद्धांत हो। देश को जिहाद से बचाना है तो इसके लिए चारों तरफ से तैयारी करनी होगी। सत्य सनातन विचारधारा को भी तेजी से लोगों में फैलाना होगा और लोगों को संगठन के बल पर शक्तिशाली भी बनाना होगा जिससे अपने समाज व राष्ट्र को बचाया जा सके और भविष्य में आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित किया जा सके।

आर्यों, आर्याओं अब घर बैठने का समय नहीं है, उठकर कार्य करने का समय है। आर्य निर्माण, संरक्षण व संगठन को तेजी से बढ़ाने का समय है। अतः आइए! सभी अपने प्रयासों में और तेजी लाएं, और दृढ़ता लाएं। परिश्रम व पुरुषार्थ को बढ़ाएं जिससे हम अपने कर्तव्य की पूर्ति कर सकें और भावी पीढ़ियों को एक सुरक्षित भविष्य दे सकें। अन्यथा वर्तमान में भी सुखी नहीं रह पाएंगे और भविष्य भी बर्बाद हो जाएगा। भविष्य को बर्बाद होने से बचाने के लिए वर्तमान में कष्ट उठाकर भी संघर्ष करें, आगे बढ़े।

हम, हमारे परिवार और आज का समाज - एक चिंतन

- आर्य अमरजीत विद्यार्थी

सारे भाव अंदर उठकर अंदर ही दबे जाते है। किसी को भी कुछ कहने या कुछ लिखने का कोई मन नहीं पर फिर भी लिख रहा हूं। समाज के लिए सोचने वाले व्यक्ति को दोहरी पीड़ा होती है। एक उसके परिवार की और एक समाज की। समाज के कार्यों में उसके अनेकों सहयोगी होते है पर पारिवारिक समस्याओं में वह अकेला ही जूझता है। किसी कार्य के करने के क्या दुष्परिणाम हो सकते है?, कुछ नहीं पता। परिवार की लड़ाई लड़े, स्वयं के अस्तित्व की लड़ाई लड़े या समाज की, ये प्रश्न विचलित कर देता है। एक बार तो लगता है कि शायद हम समाज की पीड़ा को ना ही जानते तो कुछ दर्द कम होता, समस्याएं कम होती, बोझ कम होता। पर सूक्ष्मता से चिंतन किया तो पाया कि आज पारिवारिक समस्याएं इस समाज की निष्क्रियता की ही देन है। समाज में व्यक्ति को सही कर्म करने की स्वतंत्रता होती ही है परन्तु जब समाज उसके गलत कृत्यों का भी विरोध नहीं करता तो ऐसा समाज स्वीकार्य नहीं होना चाहिए। एक ऐसे व्यक्ति या परिवार की अनदेखी दूरगामी बिगाड़ पैदा करती है। अनेकों दुष्ट उस व्यक्ति को अपना आदर्श मान उस पथ पर इसीलिए चलते है कि समाज के कुछ बसकी नहीं और समाज कुछ नहीं। आज के समाज का स्वरुप इसीलिए बिगड़ गया क्योंकि यहां कोई कहने सुनने वाला नहीं है और एक दूसरे की ईर्ष्या में सही गलत का भान भी खो बैठे है। इस सम्पूर्ण चिंतन का निष्कर्ष ये ही है कि निजी एवम् पारिवारिक उन्नति तो हो ही परन्तु साथ ही ये भी सुनिश्चित किया जाएं कि जिस विकृत समाज में ये श्रेष्ठ परिवार पलेगा उस समाज की विकृति भी साथ साथ ही दूर की जाए जिससे कि इन श्रेष्ठ परिवारों को चुनौती देने वाले लोग खड़े ना हो सके व एक दिन पूरा समाज इन श्रेष्ठ परिवारों से युक्त हो श्रेष्ठ बन जाएं। ऐसा करने के लिए हमारे वैदिक सांस्कृतिक मूल्य बहुत है, बस आवश्यकता है उनके प्रचार प्रसार की। आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द सरस्वती ने उसी कार्य को सर्व हित के लिए आगे बढ़ाया और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में आर्य महासंघ के निर्देशन में राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजत दो दिवसीय लघु गुरुकुल ऋषि के उन कार्यों का ही अनुकरण है जो उन्होंने आजीवन किए और जिन्हें वे सदा करना चाहते थे। उसी दृष्टिकोण के साथ ये लेख लिखा कि निजी व पारिवारिक उन्नति के साथ ही समाज में फैली विकृतियों को दूर करने के लिए हम आर्य महासंघ के इन प्रकल्पों को भी समय दें क्योंकि ये समय भी हमारे परिवारों के संरक्षण और संवर्धन में ही लगेगा, व्यर्थ नहीं कहलाया जाएगा।

आज का प्रश्न

- आचार्य धर्मपाल, कुरुक्षेत्र

प्रश्न :- मूर्ति की पूजा करने से क्या क्या हानियां होती हैं?

उत्तर :- मूर्ति की पूजा करने से लगभग १६ हानियां होती हैं इनमें से आज हम एक हानि आपके समक्ष रख रहे हैं कृपया आप क्रमशः सब ज्ञान वर्धन के लिए पढ़ते रहें।

मूर्ति की पूजा करने से सर्वप्रथम जो हानि है वह इस प्रकार है सभी प्राणी सुख चाहते हैं इन सब प्राणियों में सुख का उपाय केवल मनुष्य ही कर सकता है।

आइए! सुख दुख का स्थूल मुख्य कारण जानते हैं जितना मन अस्थिर रहेगा उतना दुख बढ़ेगा, जितना स्थिर रहेगा उतना सुख बढ़ेगा। आइए! अब जाने मन के स्थिर और अस्थिर का स्थूल कारण क्या है? जब यह मन साकार वस्तु में लगता है तो अस्थिर हो जाता है और जब निराकार पर लगता है तो स्थिर हो जाता है। यह एक वैज्ञानिक कारण है कि मन कभी साकार पर लगता ही नहीं है क्योंकि यदि साकार पर लगता होता तो साकार जगत में स्त्री, पुत्र, मित्र, धन आदि सब साकार ही हैं। जब इनमें मन लगता है तो अस्थिरता बढ़ जाती है और अस्थिरता के बढ़ते ही दुख भी बढ़ने लगता है।

ऐसे ही मूर्ति साकार होने से उस पर मन लगाने से मन की अस्थिरता बढ़ जाती है। यह एक मन का वैज्ञानिक नियम है कि यह मन साकार वस्तुओं के संपर्क में आते ही अस्थिर होने लगता है और अस्थिर होते ही दुख का अनुभव भी बढ़ने लगता है। इसके विपरीत जब निराकार पर मन लगाते हैं तो स्थिर होने लगता है और स्थिरता में ही मन को शांति मिलने से सुख बढ़ता है।

यदि साकार में मन लगाने से स्थिरता होती तो कोई भी मनुष्य दुखी नहीं रहता क्योंकि सभी मनुष्य साकार में तो मन लगा ही रहे हैं। इसलिए जब उपासक निराकार पर मन लगा लेता है तो स्थिरता के कारण सुख अनुभव करता है। परंतु जैसे ही उपासक उपासना से उठता है और चक्षु खोलता है, तो चक्षु खोलते ही साकार वस्तुओं के संपर्क में आते ही अस्थिरता बढ़ने से दुख फिर सताने लगते हैं। तभी उपासक अधिक से अधिक उपासना में ही रहना चाहता है क्योंकि वहां मन में स्थिरता होती है। इसलिए जितना जितना मन मूर्ति में लगाएंगे अस्थिरता बढ़ने से दुख की बढ़ती होती रहेगी।

यह पहली हानि है मूर्ति की पूजा करने से हमारा मन अस्थिर होने से अशांत होकर दुख का अनुभव करने लगता है।

अतः आप सब बुद्धिजीवी इसका स्वयं अनुभव करते रहे। मूर्ति पूजा की अगली हानि की चर्चा हम क्रमशः करते रहेंगे।

संध्या काल

चैत्र-मास, वसन्त-ऋतु, कलि-5120-21, वि. 2076-77
(10 मार्च 2020 से 8 अप्रैल 2020)
प्रातः कालः 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 P.M.)

वैशाख-मास, ग्रीष्म-ऋतु, कलि-5121, वि. 2077
(9 अप्रैल 2020 से 7 मई 2020)
प्रातः कालः 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 45 मिनट से (6.45 P.M.)

ब्रह्मचर्य

-आर्य कृष्ण (निवाड़ी, गाजियाबाद)

मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य नित्य आनंद की प्राप्ति करना है। जो केवल ईश्वर के प्राप्त कर लेने में ही संभव है। भारतीय ऋषियों ने ईश्वर प्राप्ति के लिए चार आश्रमों का निर्माण किया था।- १. ब्रह्मचर्य आश्रम। २. गृहस्थ आश्रम। ३. वानप्रस्थ आश्रम। ४. सन्यास आश्रम।

शरीर निर्माण का काल जन्म से २५ वर्ष पर्यन्त माना गया है। और यही मनुष्य जीवन का प्रथम आश्रम है। यही ब्रह्मचर्य आश्रम कहलाता है। आश्रम दो शब्दों से मिलकर बना है - आ़श्रम= आश्रम। आ अर्थात् सब प्रकार से, सब ओर से (मन से, वचन से व शरीर से) श्रम अर्थात् परिश्रम करना। पुरुषार्थ करना। अर्थात् मन, वचन व शरीर से पूर्ण पुरुषार्थ करते हुए प्राप्त करना।

ब्रह्मचर्य के निम्न अर्थ हैं -

ब्रह्म - ईश्वर चर्य - चिंतन = ईश्वर चिंतन।
ब्रह्म - वेद चर्य - अध्ययन = वेदाध्ययन
ब्रह्म - ज्ञान चर्य - उपार्जन = ज्ञानोपार्जन
ब्रह्म - वीर्य चर्य - रक्षण = वीर्य रक्षण

ब्रह्मचर्य शब्द का उच्चारण करते ही यह चारों भाव एक साथ हृदय में आ जाते हैं अर्थात् जो वीर्य की रक्षा करता है वही ज्ञान उपार्जन कर सकता है। वही वेदों का अध्ययन कर सकता है और वही ईश्वर चिंतन कर सकता है। वीर्य रक्षण से बल, बुद्धि, विद्या, और और तेज के बढ़ाने में सहायता मिलती है। महर्षि दयानंद सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि, 'जो तुम लोग सुशिक्षा और विद्या के ग्रहण करने वाले वीर्य का रक्षण करने में इस समय चूकोगे, तो पुनः इस जन्म में तुम को यह अमूल्य समय प्राप्त नहीं हो सकेगा।'

सृष्टि के आदिकाल से महाभारत काल पर्यन्त आश्रम व्यवस्था इस राष्ट्र में भली-भांति चलती रही और ब्रह्मचर्य का पालन होता रहा। जब तक इस राष्ट्र में प्रत्येक बालक ब्रह्मचर्य का पालन करता रहा, तो इस राष्ट्र के बच्चे सिंहों के साथ खेलते रहे। उनके पदाघात से चट्टाने टूटती रही। किंतु आज ब्रह्मचर्य के पालन ना होने से यह राष्ट्र निर्वीर्य और सतहीन हो गया है। आज इस राष्ट्र के लाखों बालक पाश्चात्य जीवनशैली की ओर आकर्षित होकर ब्रह्मचर्य के आचरण से भ्रष्ट होकर, युवा अवस्था आने के पूर्व ही अपने अपक्व वीर्य का नाशकर, सदा के लिए बल, बुद्धि, तेज और उत्साह से हाथ धो बैठते हैं और अनेक प्रकार की व्याधियों से ग्रस्त हो जाते हैं। पाश्चात्य शिक्षा, खान-पान, गीत-संगीत, टीवी, चलचित्र, सोशल मीडिया - फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर, इंस्टाग्राम, आदि सभी आज ब्रह्मचर्य के पालन में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। आज चरित्रहीन अभिनेता और अभिनेत्रियां युवाओं व युवतियों के आदर्श बनते जा रहे हैं। आज लाखों नवयुवक एवं नव युवतियां टिक टॉक व लाइक जैसी साइटों पर अश्लील व भद्दे नृत्यों की वीडियो अपलोड कर गर्व का अनुभव कर रही हैं। इस राष्ट्र की सरकार व सरकार का सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय मूक बधिर बना इस राष्ट्र के चारित्रिक पतन की साक्षी दे रहा है। आज टेलीविजन पर, चलचित्रों पर, अश्लील गीतों की बाढ़ सी आई हुई है। यहां तक की विवाह जैसे धार्मिक कार्यों में भी अश्लील गीतों की भरमार रहती है और इन पर कोई ध्यान नहीं दे पाता। घोर आश्चर्य उस समय होता है जब मंदिर जैसे पवित्र स्थलों पर भी ऐसे भद्दे गीत सुनाई देते हैं कि, 'लज्जा शील गवां बैठी हूं, तुझसे लगन लगा बैठी हूं।' जबकि महाराज भर्तृहरि कहते हैं कि, **'शीलं परं भूषणम्।'**

अर्थात शील मनुष्य का सबसे बड़ा आभूषण है।

महर्षि दयानंद सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में जिन आठ प्रकार के मैथुनों (स्त्री व पुरुष का दर्शन, स्पर्शन, एकांत सेवन, भाषण, विषय कथा, परस्पर क्रीडा, विषय का ध्यान और संग) का निषेध किया है वह आज के वातावरण में असंभव सा हो गया है। जो ब्रह्मचर्य पालन में बहुत बड़ी बाधा उत्पन्न कर रहा है। भौतिकवाद की दौड़ में आज परिवार इतने व्यस्त हो गए हैं कि वे संतानों के संरक्षण के लिए प्रायः बहुत कम समय दे पा रहे हैं। जिससे उनका ठीक-ठीक मार्गदर्शन नहीं हो पा रहा है।

इस दुर्दशा ग्रस्त राष्ट्र की रक्षा ब्रह्मचर्य की पुनः प्रतिष्ठा से ही संभव है। क्योंकि - **'वीर्यं महा औषधम्'** अर्थात् वीर्य शरीर के लिए सबसे बड़ी औषधि है। वेद कहता है कि- **'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत'**

अर्थात् ब्रह्मचर्य रूपी तप से देवताओं ने मृत्यु को जीत लिया। पाश्चात्य विद्वान डह्न कीथ वीर्य के विषय में लिखते हैं कि, 'वीर्य तुम्हारी हड्डियों का सार, मस्तिष्क का भोजन, जोड़ों का तेल और श्वास का माधुर्य है।'

राष्ट्र की इस धरोहर के मार्गदर्शन व संरक्षण का दायित्व अभिभावकों का है, इस राष्ट्र के प्रबुद्ध नागरिकों का है, राष्ट्र भक्तों का है एवं आर्यों का है। वे इन पथभ्रष्ट होते जा रहे युवाओं को ब्रह्मचर्य के विषय में शिक्षा दें। महावीर हनुमान, अंगद, भीम, ऋषि दयानंद सरस्वती जैसे महापुरुषों के उदाहरण दें। उनको ब्रह्मचर्य की शक्तियों से अवगत कराएं। विद्यालयों में ब्रह्मचर्य शिक्षा की अनिवार्यता पर बल दिया जाए एवं नैतिक शिक्षा की अनिवार्यता पर बल दिया जाए।

ब्रह्मचर्य पालन का सर्वोत्तम उपाय गुरूकुल शिक्षा पद्धति है। गुरूकुल शिक्षा पद्धति में ब्रह्मचर्य की अनिवार्य रूप से सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान की जाती थी। महर्षि दयानंद सरस्वती कहते हैं कि ब्रह्मचर्य गुरूकुल शिक्षा का प्राण है।

'ब्रह्मचर्यं गुरूकुल शिक्षाया प्राणभूतम।'

इसलिए आज अधिक से अधिक आवश्यकता गुरूकुल के संरक्षण की है। और अपने बच्चों को गुरूकुलीय पद्धति में शिक्षा दिलाने की अत्यधिक आवश्यकता है।

माताओं का विशेष महत्व इसलिए है कि महाभारत के अनुशासन पर्व में आया है कि, **'नास्ति मातृसमो गुरुः।'**

माता के समान कोई गुरु नहीं।वीर शिवाजी का उदाहरण हम सबके समक्ष है। इसके लिए सर्वप्रथम आहार की शुद्धि पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। क्योंकि - **'आहार शुद्धौ स्त्वशुद्धि।'** - छान्दो ६

आहार के शुद्ध होने पर रस रक्त आदि सप्त धातुएं शुद्ध होती हैं और मन निर्मल व पवित्र रहता है। पवित्र मन से ही ईश्वर की उपासना संभव है। ईश्वर की उपासना से वंचित रह जाने के कारण ईश्वर के ज्ञान से भी वंचित रहना पड़ता है क्योंकि ईश्वर की उपासना से ही शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति होती है। और ज्ञान के वंचित रह जाने पर तीनों अनादि तत्वों (ईश्वर, जीव प्रकृति) के ठीक-ठीक ज्ञान से वंचित रहना पड़ता है और जो विद्या रूपी रत्न से वंचित रह जाता है, वह समझो समस्त सिद्धियों से हीन रह जाता है।

'विद्यारत्नेन यो हीनः स हीनः सर्ववस्तुषु।' -आचार्य चाणक्य

जब एक व्यक्ति विद्या से युक्त हो जाता है तो उसके विचारों में परिवर्तन हो जाता है। यह विचार ही हमारे अच्छे बुरे कर्म का निर्धारण करता है। यह विचार ही हमारे सुख और दुखों का निर्धारण करता है। यह विचार ही हमारे भविष्य को प्रभावित करता है। यह विचार ही हमारे जीवन के लक्ष्य को प्रभावित करता है। इसलिए ये विचार भी ब्रह्मचर्य पालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। व्यायाम से ही वीर्य शरीर का अंग बनता है शारीरिक बल ऋतु व भोजन के अनुसार व्यायाम अवश्य करना चाहिए अध्ययन ऋषि कृत ग्रंथों का अध्ययन ब्रह्मचर्य पर विद्वानों की पुस्तकें व उनके जीवन के विषय में अवश्य अध्ययन करना चाहिए इससे ब्रह्मचर्य के रक्षण में सहायता मिलती है।

शिव संहिता में कहा गया है कि- **'मरणं बिन्दूपातेन जीवनं बिन्दू धारणात। तस्मादिति प्रयत्नेन कुरुते बिन्दू धारणाम्।'**

अर्थात् - बिन्दूपात (वीर्यपात) से ही मृत्यु है। और इस बिन्दू (वीर्य) के धारण करने में ही जीवन है। अतः प्रयत्न पूर्वक (सब प्रकार के उपायों को अपनाते हुए) वीर्य धारण करना चाहिए अर्थात् ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। यही मनुष्य जीवन के उत्थान का मार्ग है। यही समाज के उत्थान का मार्ग है। यही राष्ट्र के उत्थान का मार्ग है। यही जीवन के अभीष्ट लक्ष्य अर्थात् मुक्ति का मार्ग है।

गृहस्थ सम्बन्ध : भाग-८

-आचार्य संजीव आर्य, मु०नगर,

परिवार समाज की एक इकाई है अर्थात् जो एक वृहत्तर समाज (जैसा-तैसा भी है) दीखता है कारण कार्य सिद्धान्त से यह परिवारों का कार्य है। अर्थात् जो गुण-दोष इस वृहत्तर में दीख रहे हैं वे सब किञ्चित् न्यूनाधिक्य के साथ हमारे परिवारों में हैं। जिन पारिवारिक समस्यओं पर हम चर्चा कर रहे हैं वे सभी किसी न किसी रूप में समाज में दिखती हैं और जो समाज में दिखती हैं वे परिवारों में हैं। एक प्रवृत्ति हम देख सकते हैं कि समाज में नेतृत्व को लेकर सदैव संघर्ष की स्थिति रही है या रहती है। चाहे वह दूरस्थ इतिहास में राजाओं के परस्पर युद्ध रहे हों अथवा उनके अपने ही परिवारों (राजपरिवारों) के भीतरी षड्यन्त्र, यह सब नेतृत्व का ही संघर्ष है ऐसा मानना चाहिए। वर्तमान में भी विभिन्न राजनीतिक दलों का परस्पर संघर्ष जो कभी अवसरवादिता के रूप में दिखता है और कभी योजना बद्ध ढ़ंग से विभिन्न समूहों में येन केन प्रकारेण घृणा, ऊँच-नीच या भागीदारी के प्रश्न पर लड़ाना हो यह सब नेतृत्व पाने या बनाए रखने के लिए ही है। एक दूसरी समस्या जिसकी हम इस समय चर्चा करना चाहेंगे वह हैं संधियों, गठबन्धनों या सम्बन्धों का स्थाई न होना। सामान्यतया हम देखते हैं कि सामाजिक या राजनैतिक सम्बन्धों के बनने या टूटने से सामान्य जन दु:खी सुखी नहीं होते हैं अथवा कहना चाहिए कि वे उतने जागरूक या चिन्तनशील नहीं हैं कि विभिन्न राजनैतिक सम्बन्धों या सामाजिक सम्बन्धों के टूटने या बनने की समीक्षा करके उसके हानि लाभ को जान सकें। परन्तु जब ये सम्बन्ध परिवार के स्तर पर टूटते हैं या बनते हैं तो इनका जो प्रभाव परिवारों पर होता है वह सामाजिक या राजनैतिक सम्बन्धों की तुलना में कहीं अधिक निजि होता है। अत: परिवार के सम्बन्धों को यदि स्थिर कर दिया जावे तो उससे आगे की कड़ियों में बनने वाले सम्बन्ध भी कहीं अधिक स्थायी हो जावेंगे।

ऋषियों ने गृहस्थ सम्बन्धों को स्थायी बनाने के अनेक विध उपाय किये हैं इन्हीं उपायों की कड़ी में ध्रुव व अरुन्धती दर्शन का विधान विवाह की उत्तर विधि में किया गया। इस विधि की क्रिया और मन्त्र दोनों अति महत्वपूर्ण हैं- वर को निर्देश दिया कि वह वधू को अरुन्धती नामक तारा दिखावे और वधू देखे और कहे कि मैं देखती हूँ और प्रार्थना करे कि मैं भी अरुन्धती की भाँति रूद्ध हो जाऊँ। यह तारामण्डल आपस में आकर्षणानुकर्षण से ऐसा बंधा है कि निकट में दिखने वाले दो तारे अधिक गणनीय दूरी पर दूर होते नहीं दीख पड़ते हैं। इसे ऐसे भी समझा जा सकता है- अरुन्धती के निकट स्थित तारे का नाम है वशिष्ठ। अरुन्धती कभी भी वशिष्ठ का उल्लंघन नहीं करती है। समझने योग्य बात यह है कि मनुष्य के भीतर की प्रवृत्तियों को नियन्त्रित किया जा सकता है। यह अपने निर्णयों को नियनित्रत करता है यदि उसे अपना लाभ दिखे तब। इसीलिए हम व्यवस्थओं को स्वीकार करते हैं और इसी में हम सबका लाभ भी है। गृहस्थ की व्यवस्था एक शकट, यान या गाड़ी के जैसी है जिसमें चालक और परिचालक दो लोग है ये लौकिक बस के कण्डक्टर, ड्राईवर की भाँति किसी सरकार या सेठ की नौकरी नहीं कर रहे हैं, स्वतन्त्र हैं, कर्त्ता हैं। अत: नौकरी की भाँति बंधे रहकर व्यवहार भी नहीं कर सकते। अब दोनों में कौन चालक बने? कौन परिचालक बने? किसलिए बने? यह चिन्तनीय है। यह तो स्पष्ट है कि शास्त्र ने नेतृत्व वर के हाथ में दिया है वधू ने भी संस्कार के आरम्भ में ही अपना मार्ग प्रशस्त करने की प्रार्थना वर से की थी, आयु, अनुभव, विद्या और सामर्थ्य में भी वह ही अधिक है अत: नेतृत्व तो वर के हाथ में है ही। लेकिन वह स्वेच्छाचारी नहीं हो सकता पत्नी और पति दोनों एक दूसरे के रक्षक हैं अत: पत्नी भी उसे अधर्म मार्ग पर जाने नहीं दे सकती वह परिचालकवत् है। उसके द्वारा हरि झंडी मिले बिना यह चालक गाडी नहीं चला सकता भले ही वह चालक है। किन्तु गृहस्थ के स्वामीपन में दोनों समान हैं, भिन्न हैं, गृहस्थ रूपी गाड़ी दोनों को ही समझदारी पूर्वक चलानी होगी।

सम्बन्ध स्थिर रहे इसके लिए वधूवर दोनो प्रतिज्ञा करते हैं। वर वधू के मस्तक पर हाथ रख के वधू की ओर देखकर स्थिरता के लिए आशंसा अर्थात् अभिलाषा आगे लिखे मन्त्रों के भाव से करें-

ओं ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवं विश्वमिदं जगत् ।
ध्रुवास: पर्वता इमे ध्रुवा स्त्री पतिकुले इयम् ।।
ओं ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पोष्ये मयि।
मह्यं त्वादाद् बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती संजीव शरद: शतम् ।।

ऋषि दयानन्द कृत का अर्थ ही हम यहाँ दे रहे हैं।

हे वरानने ! जैसे (द्यौ:) .....सदा स्थिर रह।

हे स्वामिन्! ..... विरोध में न चलें।

कितना भव्य, भावपूर्ण व सुन्दर उदाहरणों से भरी हुई अभिलाषा है- सूर्य में सूर्य की प्रभा उसकी कांति सदैव उसके साथ रहती है वैसे हे वधू और हे वर इस पूर्ण जीवन में मेरा साथ देना, जैसे पृथ्वी, संसार व पर्वत स्थिर हैं वैसे ही आप भी मेरे कुल में, गृहस्थ में सदा स्थिर रहना। दोनों ने अपनी-अपनी प्रतिज्ञाओं से प्रेमपूर्वक आशंकाओं को आशंसा में बदल देने का कितना सुन्दर प्रबन्ध है।

क्रमश: .....

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	24 मार्च	दिन-मंगलवार	मास-चैत्र	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-उ0भाद्रपदा
पूर्णिमा	08 अप्रैल	दिन-बुधवार	मास-चैत्र	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-चित्रा
अमावस्या	23 अप्रैल	दिन-गुरुवार	मास-वैशाख	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-अश्विनी
पूर्णिमा	07 मई	दिन-गुरुवार	मास-वैशाख	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-स्वाति

व्यवहारभानुः - आचरण की शिक्षा के लिए ऋषि का श्रेष्ठ ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर सामान्य सिद्धान्त अनुरूप व्यवहार के लिए व्यवहारभानु जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि का एक-एक शब्द व पंक्ति व्यक्ति के लिए अमूल्य प्रेरणा का स्रोत है। आइए उनकी व्यवहारभानुः पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के परिपालन की दिशा में आगे बढ़कर अपने-अपने आचरण को वेदानुकुल बनाएं और ऋषि के ही शब्दों के अनुरूप- **''अपने तथा अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें, कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।''**

यहाँ प्रस्तुत है व्यवहारभानुः पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार व्यवहार करते हैं तो हम कितना अपना व दूसरों का हित कर सकते हैं और समाज में व्याप्त अनेक प्रकार के दुर्व्यवहारों से न केवल स्वयं बच सकते हैं अपितु अपनी सन्तानों तथा शिष्यों को भी बचा सकते हैं।

जब गवर्गण्ड अपने महलों में सोने को गया, डौढ़ी बन्द हुई। तब खुशामदी लोगों ने चौकी पहरे वालों से कहा कि जब तक प्रातःकाल हम न आवें तब तक किसी का मिलाप महाराज के साथ मत होने देना'। उनने कहा कि-"अच्छा। आज कि दिन कुछ गहरी प्राप्ति नहीं हुई।" **खुशामदी**-"आज न हुई कल हो जावेगी, हमारा और तुम्हारा तो साझा है ही। जो कुछ खजाने और प्रजा से निकालकर अपने घर में पहुँचे वही अपना है। जब राजा को नशा और रण्डीबाजी आदि खेल में सब लोग मिलकर लगा देंगे, तभी अपना गहरा होगा। खजाना अपना ही है। और सब आपस मिले रहो, फूटना न चाहिए। सबने कहा-हाँ-जी-हाँ, यही ठीक है।

वे तो चले गये। जब गवर्गण्ड सोने को गया तब गर्म मसाले पड़े हुए बैंगन के शाक ने गर्मी की और जंगल की हाजत हुई। ले लोटा जाजरू में गया, रात भर खूब जुलाब लगा। रात्रि में कोई तीस दस्त हुये। रात्रिभर नींद न आई, बड़ा व्याकुल रहा। उसी समय वैद्यों को बुलाया। वे भी गवर्गण्ड के सदृश ही थे। ऊटपटांग ओषधियाँ दी, उनने और भी बिगाड़ किया क्योंकि गवर्गण्ड के पास बुद्धिमान् क्योंकर ठहर सकते हैं? जब प्रातःकाल हुआ तब तक खुशामदियों की मण्डली ने सभा का स्थान घेरके दासियों से पूछा कि-"महाराज क्या करते हैं? **दासी**-"आज रातभर जुलाब लगा और व्याकुल रहे।" **खुशामदी**-"क्या कोई रात्रि में महाराज के पास आया भी था?" **दासी**-"दस-बारह जने आये थे।" **खुशामदी**-"कौन-कौन आये थे? उनके नाम भी जानती हो?" **दासी**-"हाँ, तीन के नाम जानती हूँ अन्य के नहीं।"

तब तो खुशामदी लोग विचारने लगे कि किसी ने अपनी निन्दा तो न कर दी हो। इसलिये आज से हम में से एक-दो पुरुषों को रात में भी डोढ़ी में अवश्य रहना चाहिए। सबने कहा-"बहुत ठीक है।" इतने में जब आठ बजे के समय मुखमलीन गवर्गण्ड आकर गद्दी पर बैठा तब खुशामदियों ने भी उनसे सौ गुणा मुख बिगाड़कर शोकाकृति मुख होकर ऊपर से झूठमूठ अपनी चेष्टा जनाई। **गवर्गण्ड**-"बैंगन का शाक खाने में तो स्वादु होता है, परन्तु बादी करता है। उससे हमको बहुत दस्त लगने से रात्रिभर दुःख हुआ।" **खुशामदी**-"वाह जी वाह महाराज! आपके सदृश न कोई राजा हुआ न होगा, और न कोई इस समय है। क्योंकि महाराज ने खाते समय तो उसके गुणों की परीक्षा की, और रात्रिभर में उसके दोष भी जान लिये। देखिए महाराज! जब बैंगन दुष्ट है तभी तो परमेश्वर ने उसके ऊपर खूँटी, चारों ओर काँटें लगा दिये। ऊपर का वर्ण कोयलों के समान, और भीतर का रंग कोढ़ी की चमड़ी के सदृश किया है।

गवर्गण-"क्यों जी! कल रात को तुमने इसकी प्रशंसा में मुकुट आदि का अलंकार और इस समय इसकी निन्दा में खूंटी आदि की उपमा देते हो। अब हम किसको सच्ची मानें?" **खुशामदी**-"घबराके बोले कि धन्य-धन्य-धन्य है आप-की विशाल बुद्धि को, क्योंकि कल सन्ध्या की बात अब तक भी नहीं भूले। सुनिए महाराज! हमको साले बैंगन से क्या लेना-देना था, हमको तो आपकी प्रसन्नता में प्रसन्नता और अप्रसन्नता में अप्रसन्नता है। जो आप रात को दिन और दिन को रात, सत्य को झूठ वा झूठ को सत्य कहें, सो सभी ठीक है।" **गवर्गण्ड**-"हाँ-हाँ, नौकरों का यही धर्म है कि कभी स्वामी की किसी बात में प्रत्युत्तर न दें, किन्तु हाँजी, हाँजी ही करते जाये।"

खुशामदी-"ठीक है, राजाओं का यही धर्म है कि किसी बात की चिन्ता कभी न करे। रात-दिन अपने सुख में मग्न रहे। नौकर-चाकरों पर सदा विश्वास करके सब काम उनके अधीन रक्खें। बनिये बक्काल के समान हिसाब-किताब कभी न देखें। जो कुछ सफ़ेद का काला और काले का सफ़ेद करें, सो ही ठीक रक्खें। जिस दरख्त को लगावें, उसको कभी न काटें। जिसको ग्रहण किया, उसको कभी न छोड़े, चाहे कितना ही अपराध करे। क्योंकि जब राजा होके भी किसी काम पर ध्यान देकर आप अपने आत्मा, मन और शरीर से परिश्रम किया तो जानो उनका कर्म फूट गया और जब हिसाब आदि में दृष्टि की तो वह महादरिद्र है, राजा नहीं।"

गवर्गण्ड-"क्यों जी ! कोई मेरे तुल्य राजा और तुम्हारे सदृश सभासद् कभी हुए होंगे और आगे कोई होंगे वा नहीं? " **खुशामदी**-"नहीं, नहीं, कदापि नहीं।" न हुआ, न होगा, और न है। **गवर्गण्ड**-"सत्य है, क्या ईश्वर भी हमसे अधिक उत्तम होगा?" **खुशामदी**-"कभी नहीं हो सकता। क्योंकि उसको किसने देखा है? आप तो साक्षात् परमेश्वर हैं। क्योंकि आपकी कृपा से दरिद्र का धनाढ्य, अयोग्य से योग्य और अकृपा से धनाढ्य का दरिद्र, योग्य से अयोग्य तत्काल ही हो सकता है।"

इतने में नियत किये प्रातःकाल को सायंकाल मानकर सोने को सब लोग गये। जब सायंकाल हुआ तब फिर सभा लगी। इतने में सिपाहियों ने आकर साधुओं के झगड़े की बात कही। सुनकर गवर्गण्ड ने सभा सहित वहाँ जाके साधुओं से पूछा कि-"तुम शूली पर चढ़ने के लिए क्यों सुख मानते हो?" **साधु**-"तुम हमसे मत पूछो, चढ़ने दो, समय चला जाता है। ऐसा समय हमको बड़े भाग्य से मिला है।" **गवर्गण्ड**-"इस समय शूली पर चढ़ने का क्या फल होगा?" **साधु**-"हम नहीं कहते, जो चढ़ेगा वह फल देख लेगा। हमको चढ़ने दो।" **गवर्गण्ड**- "नहीं-नहीं। जो फल होता हो सो कहो। सिपाहियो! इनको इधर पकड़ लाओ।" [वे] पकड़ लाये।

साधु-"हमको क्यों नहीं चढ़ने देते? झगड़ा क्यों करते हो।" **गवर्गण्ड**-"जब तक तुम इसका फल न कहोगे तब तक हम कभी न चढ़ने देंगे।" **साधु**-"दूसरे को कहने की तो बात नहीं है, परन्तु तुम हठ करते हो तो सुनो- 'जो कोई मनुष्य इस समय में शूली पर चढ़कर प्राण छोडे देगा, वह चतुर्भुज होकर विमान में बैठके आनन्दस्वरूप स्वर्ग को प्राप्त होगा।" **गवर्गण्ड**-"अहो! ऐसी बात है तो मैं ही चढ़ता हूँ, तुझको न चढ़ने दूँगा।" ऐसा कहकर झट आप ही शूली पर चढ़कर प्राण छोड़ दिये। साधु अपने आसन पर आये। चेले ने कहा कि-"महाराज! चलिए, यहाँ अब न रहना चाहिए।" गुरु ने कहा कि-"अब कुछ चिन्ता नहीं। जो पाप की जड़ गवर्गण्ड था, वह मर गया। अब धर्मराज्य होगा। क्या चिन्ता है, यहीं रहो।

-क्रमशः ....

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट-

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अतः आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अतः पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक

www.aryanirmatrisabha.com/हिन्दी में पत्रिका

पर जाएं।

चैत्र

10 मार्च-08 अप्रैल 2020 — ऋतु- वसन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
23 मार्च शहीदी दिवस	उ॰ फाल्गुनी कृष्ण प्रतिपदा 10 मार्च	हस्त कृष्ण द्वितीया 11 मार्च	चित्रा कृष्ण तृतीया 12 मार्च	स्वाति कृष्ण चतुर्थी/पंचमी 13 मार्च	विशाखा कृष्ण षष्ठी 14 मार्च	अनुराधा कृष्ण सप्तमी 15 मार्च
ज्येष्ठा कृष्ण अष्टमी 16 मार्च	मूल कृष्ण नवमी 17 मार्च	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण दशमी 18 मार्च	उत्तराषाढ़ा कृष्ण एकादशी 19 मार्च	श्रवण कृष्ण द्वादशी 20 मार्च	धनिष्ठा कृष्ण द्वादशी 21 मार्च	शतभिषा कृष्ण त्रयोदशी 22 मार्च
पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण चतुर्दशी 23 मार्च	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण अमावस्या 24 मार्च	रेवती शुक्ल प्रतिपदा 25 मार्च	रेवती शुक्ल द्वितीया 26 मार्च	अश्विनी शुक्ल तृतीया 27 मार्च	भरणी शुक्ल चतुर्थी 28 मार्च	कृत्तिका शुक्ल पंचमी 29 मार्च
रोहिणी शुक्ल षष्ठी 30 मार्च	मृगशिरा शुक्ल सप्तमी 31 मार्च	आर्द्रा शुक्ल अष्टमी 1 अप्रैल	पुनर्वसु शुक्ल नवमी 2 अप्रैल	पुष्य शुक्ल दशमी 3 अप्रैल	आश्लेषा शुक्ल एकादशी 4 अप्रैल	मघा शुक्ल द्वादशी 5 अप्रैल
पू॰ फाल्गुनी शुक्ल त्रयोदशी 6 अप्रैल	उ॰ फाल्गुनी/हस्त शुक्ल चतुर्दशी 7 अप्रैल	चित्रा शुक्ल पूर्णिमा/प्रतिपदा 8 अप्रैल	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नवसंवत्सर प्रारम्भ आर्य समाज स्थापना दिवस 25 मार्च	श्रीरामचन्द्र जयन्ती चैत्र शुक्ल नवमी 2 अप्रैल		

वैशाख

08 अप्रैल- 07 मई 2020 — ऋतु- ग्रीष्म

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
			स्वाति कृष्ण द्वितीया 9 अप्रैल	विशाखा कृष्ण तृतीया 10 अप्रैल	अनुराधा कृष्ण चतुर्थी 11 अप्रैल	ज्येष्ठा कृष्ण पंचमी 12 अप्रैल
मूल कृष्ण षष्ठी 13 अप्रैल	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण सप्तमी 14 अप्रैल	उत्तराषाढ़ा कृष्ण अष्टमी 15 अप्रैल	श्रवण कृष्ण नवमी 16 अप्रैल	धनिष्ठा कृष्ण दशमी 17 अप्रैल	शतभिषा कृष्ण एकादशी 18 अप्रैल	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण द्वादशी 19 अप्रैल
पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण त्रयोदशी 20 अप्रैल	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण चतुर्दशी 21 अप्रैल	रेवती कृष्ण अमावस्या 22 अप्रैल	अश्विनी कृष्ण अमावस्या 23 अप्रैल	भरणी शुक्ल प्रतिपदा 24 अप्रैल	कृत्तिका शुक्ल द्वितीया 25 अप्रैल	रोहिणी शुक्ल तृतीया 26 अप्रैल
मृगशिरा शुक्ल चतुर्थी 27 अप्रैल	आर्द्रा शुक्ल पंचमी 28 अप्रैल	पुनर्वसु शुक्ल षष्ठी 29 अप्रैल	पुष्य शुक्ल सप्तमी 30 अप्रैल	आश्लेषा शुक्ल अष्टमी 1 मई	मघा शुक्ल नवमी 2 मई	पू॰ फाल्गुनी शुक्ल दशमी 3 मई
उ॰ फाल्गुनी शुक्ल एकादशी/द्वादशी 4 मई	हस्त शुक्ल त्रयोदशी 5 मई	चित्रा शुक्ल चतुर्दशी 6 मई	स्वाति शुक्ल पूर्णिमा 7 मई			

Rishi Dayanand - His Life And Work

-Saroj Arya, Delhi

he went to sleep again. It was quite late in the morning when he got up and as soon as he rose, he threw up again. He felt suspicious and sent for Jagannath, his cook.

"Did you tamper with my evening meal?"

"No sir, I know nothing about it."

"It is no use denying what is so evident, speak the truth," said Swamiji sternly.

The cook stood trembling.

"I did poison the milk you took last evening. I have committed a sin. What a fool I was to be taken in!", He fell at the feet of the Rishi.

"Jagannath, by my death at this stage my work is left unfinished. You have no idea of the harm you have done to the country. But why blame you? It was so ordained. Here are a few rupees, which may prove of use to you. Leave this state at once and fly to Nepal, where you may be safe. Tarry not, now, disappear quietly. Let nobody know what you have done."

The people nearby come to know of Swamiji was ill and sent for a doctor, who administered some medicine to stop vomiting and also allay the patient's thirst. The dreadful pain continued and respiration was getting quicker, however, Swamiji's calmness was remarkable, it was he alone could spend the excruciating pain he was suffering with such patience. The Raja learnt of the Swamiji's illness in the evening and sent the royal physician, Ali Mardan Khan. This doctor, it is said, was an accomplice in the concubine's conspiracy.

At any rate, his treatment did not improve matters. The condition of the patient was growing worse, frequent fits of unconsciousness occasioned by purging added to the trouble. Blisters were appearing on the whole body. Doctor Adams came to see Swamiji on the 15th October and advised his removal to Mount Abu. The Maharaja could not possibly like this idea: to allow Swamiji to leave his State in such a precarious condition would be the height of folly, and if the worst should happen, it would be lasting slur on his fair name and that of the state. But Swamiji was inclined to leave Jodhpur and the request of the Raja had no effect. He accompanied the palanquin of his distinguished guest to some distance, and then with foldede hands and eyes full of tears took his leave.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

यह मेरे जीवन को बदलने वाला सत्र था जहाँ मैंने अपने जीवन में जो नहीं जान पाया वह पूर्ण प्रमाण के साथ अपने सत्य वैदिक धर्म को कल्पना से भी ऊपर पाया। आचार्य प्रवर द्वारा पूर्ण प्रमाणिक तत्थों के साथ राष्ट्र, धर्म, वैदिक धर्म को पूरी तरह से समझाया गया। जिससे जीवन में आयी सभी भ्रांति को दूर कर पाया और अपने इस दो दिवसीय लघु गुरुकुल सत्र में अपने आपको ज्ञान की उच्चता पर पा रहा हूँ। मुझे मेरी आर्य-शक्ति का आभास करने के लिए मैं सदैव मेरे प्रेरक एवं आचार्यों का ऋणी रहूंगा।

इस पवित्र वैदिक कार्य में मैं अपने तन, मन, धन से सहयोग करता रहूंगा। जिस तरह से निर्देश होगा मैं ऊपर वर्णित में से किसी भी प्रकार से सहयोग करता रहुंगा।

नाम : आर्य राजेश उपाध्याय, आयु : 39 वर्ष, योग्यता : बी.कॉम, कार्य : नौकरी, पता : इन्दौर, मध्य भारत।

मेरे जीवन का प्रकाश सत्यार्थ प्रकाश जो कि 4 महीने पूर्व अक्टूबर 2019 आर्य निर्मात्री सभा के बारे में आर्य भूपेन्द्र जी के माध्यम से जिज्ञासा उत्पन्न हुई। इस कार्यक्रम का इन्तजार जनवरी 2020 से कर रहा था। और आज के इस शिविर से मेरे अन्दर क्रांतिकारी संकल्प में दृढ़ता आई। जिस उद्देश्य को लेकर स्कूल/कॉलेज में आह्वान नामक संस्था (स्वयं व बहन द्वारा स्थापित) के माध्यम से युवाओं को सनातन संस्कृति की ओर अग्रसर करने का प्रयासरत हूँ। आज के इस सत्र से मेरे अन्दर अत्यधिक ऊर्जा का विस्फोट हुआ।

उपदेशक के लिए स्वयं को प्रशिक्षण के माध्यम से तैयार होकर सहयोग कह्ना चाहता हूँ।

नाम : सौरभ शेखर, आयु : 29 वर्ष, योग्यता : एम.एस.सी, कार्य : शिक्षक, पता : इन्दौर, मध्य भारत।

मुझे आर्य पद्धति और आचार्य द्वारा इन दो दिनों में जो परमात्मा परमेश्वर के बारे में सच-सच वेदों के अनुकरण पढ़ाया और समझाया वो मेरे लिए एक नये जीवन का प्रारम्भ है। दूसरा मुझे मेरे कर्त्तव्यों के बारे में हमें बताया, जैसे देश के प्रति, देश की उन्नति के लिए, किसकी उपासना करने योग्य (तथ्यों के आधार पर) मूर्ति-पूजा हमारे लिए हमारे देश के लिए क्यों हानिकारक है, परमेश्वर को कैसे याद करना है संध्या कैसे करनी है और ऐसा करने से क्या होता है? और यही एक मात्र रास्ता क्या है। और भी बहुत कुछ। मैं अपने आप में यहाँ भाग्यशाली समझता हूँ।

तन से मन से और धन से पूरी कोशिश रहेगी बढ़-चढ़कर भाग लेने की।

नाम : भारत, आयु : 35 वर्ष, योग्यता : अन्तर्राष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी, कार्य : स्पोर्ट्स, पता : झज्जर, हरियाणा।

मैने यहां आकर जाना है कि कुछ लोग अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए धर्म के नाम, मत के नाम पर लोगों को, हमें भ्रमित कर रहे हैं। मंदिर, देवालय, मूर्ति के नाम पर लोगों को किस प्रकार मूर्ख बना रहे हैं। जबकि वास्तव में उस परमपिता परमात्मा की सूरत तो किसी ने देखी नहीं है। और हमें अपने राष्ट्र में हो रहे गलत प्रभाव को जाना है। ईश्वर के असली रूप को जाना है और हमें खुद अच्छी तरह से जागृत होने के बाद अन्य लोगों को इस पथ की महिमा को समझाना और समाज में एक बदलाव लाना है। यहाँ आकर मैंने सबसे अच्छा कार्य तो यह जाना है कि किसी प्रकार आर्य समाज के लिए लोगों ने दुष्प्रचार कर रखा है ताकि उनकी दुकानें बंद न हों। लेकिन यहाँ आकर सत्यता को पहचाना है। जिसके लिए मैं आर्य निर्मात्री सभा का हृदय की गहराईयों से धन्यवाद करता हूँ धन्यवाद!

मैं अपना समय लोगों को जागरूक करने में लगाऊँगा। और अधिक ज्ञान अर्जित कर जो मैं सामर्थ्य से कर सकू वो कार्य करने के लिए तत्पर रहूँगा।

नाम : राकेश कुमार शर्मा, आयु : 37 वर्ष, योग्यता : स्नताक, कार्य : भारतीय सेना क्लर्क, पता : नजफगढ़ दिल्ली।

इस सत्र में मुझे कइ नई बातें सीखने को मिली। इस सत्र से मुझे जीवन कैसे जीया जाए इसके बारे में जानकारी मिली। अपने राष्ट्र को कैसे बचाना है। इसके बारे में जानकारी मिली। हमें वेद के नियमों का पालन अवश्य करना चाहिए, क्योंकि इसमें हमारे जीवन को सुखमय तरीके से जीने का तरीका बताया है। हमें वेद के नियमों का पालन ही नहीं बल्कि हमारे साथ-साथ अपने आस-पास के लोगों को भी आर्य/आर्या बनने के लिये प्रेरित करना चाहिये। ईश्वर कौन होता है। यह पता चला है।

मैं आगे भी लोगों को इस मार्ग में आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करूँगी।

नाम : माधुरी, आयु : 28 वर्ष, योग्यता : एम.कॉम, कार्य: शिक्षिका, पता : बिलासपुर।

यहाँ आकर हमारे अनेकों शंकाओं का समाधान हुआ। ईश्वर, वेद, धर्म, आत्मा, परमात्मा आदि सभी के सम्बन्ध में ठीक-ठीक जानकारी प्राप्त कर सके। दान, धन आदि प्राप्त करने का तरीका, मूर्ति-पूजा निषेध आदि को जानकर मैं आगे के जीवन के लिए पूर्णत: तैयार करते हुए वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करते हुये आर्या एवं आर्यावर्त के निर्माण में सहयोग प्रदान करूँगी।

नाम : शकुन्तला, आयु : 49 वर्ष, योग्यता : आठवीं, कार्य: गृहणी, पता : बिलासपुर, छत्तीसगढ़।

सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने की प्रेरणा मिली। राष्ट्र की एवं स्वयं की सुरक्षा हेतु संगठित होने की प्रेरणा मिली। वेद ईश्वर की वाणी है। ईश्वर एक है, ईश्वर के 10 गुणों के विषय में जानकारी मिली। शिविर में राष्ट्र के लिए कुछ करने की इच्छा जागी। सन्ध्या-उपासना करने की अच्छी विधि सीखी। ईश्वर को प्राप्त (मोक्ष) करने की इच्छा जाग्रत हुई।

नाम : सुनिता, आयु : 56 वर्ष, योग्यता : पी.एच.डी., कार्य: शिक्षिका, पता : बिलासपुर, छत्तीसगढ़।

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।